DR. TALIMEREN AO

Dr. Talimeren Ao was an Indian footballer and physician. He was born on 28 January 1918 in Assam, Naga hills in the village of Changki, in the then Naga Hills District of Assam.

Dr. Talimeren Ao was captain of Mohun Bagan and Indian football team, flag bearer of the Indian Olympic contingent at the 1948 London Games and perhaps the most famous Naga. A phantom figure who hovers over the football history of free India, his footprints have faded but his name is resonant and powerful in the collective memory of his people.

Two football tournaments are staged in his name. In Assam, where Talimeren grew up, there are two sporting venues named after him - an indoor stadium in Cotton College, Guwahati, where he studied, and an outdoor venue in Kaliabor, east of the Kaziranga National Park.

At a time when the Indian Super League (ISL), India's high-profile football league, has a team called North East United near the top of the points table, it's worth re-telling the story of the region's first footballing hero. At the beginning, there will always be Talimeren. The name means the all-glorious or all-mighty in the Ao language and, at 5'10", he had the physique to back it up. Talimeren was a dominating presence in midfield and defence for nine seasons at Mohun Bagan (1943 to 1952), and a team-mate of Sailen Manna and Taj Mohammed at the London Olympics.

Talimeren had to give up competitive football to pursue his medical career during the early years of independent India, returning home to Kohima as an assistant civil surgeon at the Civil Hospital in 1953. He retired as Nagaland's Director of Health Services in 1978 and died in 1998 at the age of 80.

Talimeren's life is an implausible odyssey, an enormity of achievement over a short span of time while straddling a vast geography. From the hilltop village of Changki in the Ao tribe's homeland of Mokokchung in Nagaland, to leading out free India's first Olympic contingent in London, Talimeren traversed villages, towns, cities and nations.

Football is central to his storyline. The sport found its way into his life at the age of six or seven, after the Baptist Reverend Subongwati moved his family from Changki to Impur, also in Mokokchung, as part of his missionary work.

In Impur, Talimeren became his school's football captain. His game started gathering strength in 1933, when he moved to high school at Jorhat's Christian Mission School. From there, he moved to Guwahati's Cotton College, where he was the leading all-round sportsman, collecting medals and trophies in athletics, volleyball and football.

As a young footballer, he had an appetite for self-improvement. After watching Guwahati's Maharana Club footballers train on the same ground as his college team, he asked them if he could join. Maharana, Guwhati's biggest club at the time, turned the Cotton College striker into a defensive midfielder.

The club were happy to put him up against their opposition, holding back the attacks on goal, and soon Talimeren was noticed as the man who had the temerity to mark and block the sublime Noor Mohammed of Hyderabad City Police. He soaked everything in, borrowing the training methods of better players, and earning a name for himself in the newspaper headlines and bright lights.

Talimeren's move from Guwahati to Calcutta, the heart of Indian football, came about after he earned a seat at the Carmichael Medical College (the present-day RG Kar Medical College). His friend from Maharana, Sarat Das, brought him over to Mohun Bagan in 1943, where he first paid a "joining fee" before working his way into their first XI. From then, it was juggling his medical studies and making his mark as a player, then on - within a year - to the Bagan captaincy and finally as India captain for the London Olympics and a short tour of Holland.

At the Olympics, India almost upset France in their first match, missing two penalties in a 1-2 defeat. After the Olympics, on a tour of club matches in Holland, they beat Ajax Amsterdam 5-2 and of five games in England against club sides, won three and drew two.

Legend has it that Talimeren was offered a year's contract with Arsenal but he chose to return to India and continue his studies, earning his MBBS degree in 1950.

As India captain, he naturally took on the role of leader, the team rallying behind his confidence. Under conventional Naga practice, Talimeren Ao's name could have read Subongwati Talimeren Ningdangri in full - father's name followed by son's name followed by clan.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Dr. Talimeren Ao.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamp/FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

डॉ. तालीमेरेन आओ
DR. TALIMEREN AO

विवरणिका
BROCHURE

डॉ. तालीमेरेन आओ

डॉ. तालीमेरेन आओ एक भारतीय फुटबॉल खिलाड़ी और चिकित्सक थे। उनका जन्म 28 जनवरी, 1918 को असम के तत्कालीन नगा हिल्स जिला के चांगकी गांव में नगा हिल्स में हुआ था।

डॉ. तालीमेरेन आओ भारतीय फुटबॉल टीम मोहन बागान के कप्तान थे और 1948 के लंदन खेलों में भारतीय ओलम्पिक दल के ध्वजवाहक थे और शायद सबसे प्रसिद्ध नगा विभूति। स्वतंत्र भारत के फुटबॉल इतिहास में तालीमेरेन आओ किसी फैंटम की तरह छाए हुए थे, जिनके पैरों के निशान भले ही मद्धिम पड़ गए हों, लेकिन अपने लोगों की स्मृतियों में वे आज भी गुंजायमान हैं।

असम में तालीमेरेन आओ के नाम पर फुटबॉल के दो टूर्नामेंट आयोजित किए जाते हैं। वे यहीं बड़े हुए थे। उनके नाम पर दो क्रीड़ा–स्थल हैं। पहला गुवाहाटी के कॉटन कालेज जहां उन्होंने पढ़ाई की थी, में एक इंडोर स्टेडियम और दूसरा कलियाबर के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के पास आउटडोर स्टेडियम।

तालीमेरेन उस समय भारत की सुपर लीग में भारत की हाई–प्रोफाइल टीम, नार्थ ईस्ट यूनाइटेड टीम के द्वारा ऊंचाईयों तक पहुंचे। 'आओ' भाषा में उनके नाम का अर्थ है– गौरवशाली या सर्वशक्तिशाली। इस शब्द को 5 फुट 10 इंच लंबे तालीमेरेन अपने डील–डौल से चरितार्थ भी करते थे। मोहन बागान टीम में (1943 से 1952) नौ वर्षों तक तालीमेरेन मिडफील्ड और डिफेंस में अपनी उपस्थिति से विपक्षी टीम के लिए अजेय बने रहे और लंदन ओलम्पिक में शैलेन मन्ना और ताज मोहम्मद के साथी रहे।

अपने मेडिकल करियर को संवारने के लिए तालीमेरेन आओ को स्वाधीन भारत के शुरुआती वर्षों में प्रतिस्पर्धात्मक फुटबॉल को छोड़ना पड़ा और वे गृह–नगर कोहिमा लौट आए और 1953 में उन्होंने वहां के सिविल अस्पताल में बतौर सहायक सिविल सर्जन के रूप में कार्य किया। वे 1978 में निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएं (नागालैंड) के पद पर रहते हुए सेवानिवृत्त हुए। 80 वर्ष की आयु में 1998 में उनकी मृत्यु हो गई।

तालीमेरेन का जीवन एक अविश्वसनीय ओडिसी की तरह है, जिन्होंने बहुत ही कम समय में बहुत बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं और जो भौगोलिक दृष्टि से इस देश तक सीमित न होकर दूर–दूर के देशों तक फैली हुई है। यह चांगकी गांव से लेकर नागालैंड में मोकोकोचंग की आओ जनजाति की मातृभूमि तक फैली है। इन्होंने लंदन में स्वतंत्र भारत के प्रथम ओलंपिक का नेतृत्व किया। तालीमेरेन ने गांवों, नगरों, शहरों और दूसरे देशों की यात्रा की।

फुटबॉल उनके पूरे जीवन का केंद्र बिन्दु है। छः अथवा सात वर्ष की आयु में ही इस खेल ने उनके जीवन में अपनी जगह बना ली थी। यह वह दौर था, जब उनके पिता बैप्टिस्ट रेवरेन्ड सुबंगवती मिशनरी कामकाज के लिए अपने परिवार के साथ चांगकी से इम्पुर और मोकोकचुंग में रहे।

इम्पुर में, तालीमेरेन अपने स्कूल के फुटबॉल कप्तान बने। 1933 में उनके खेल को नया आयाम मिला, जब वे हाई स्कूल की पढ़ाई के लिए जोरहाट के क्रिश्चियन मिशनरी स्कूल में पहुंचे। वहां से फिर वे आगे की पढ़ाई के लिए गुवाहाटी के कॉटन कॉलेज पहुंचे। यहां वे एक लीडिंग ऑलराउंड स्पोर्टसमैन बनकर उभरे। उन्होंने एथलेटिक्स, वॉलीबाल और फुटबॉल में ढेरों ट्राफियां जीतीं।

एक युवा फुटबॉलर के रूप में तालीमेरेन में आत्म–सुधार की बड़ी भूख थी। गुवाहाटी के महाराणा क्लब के खिलाडियों को जब उन्होंने अपनी कॉलेज टीम के रूप में उसी ग्राउंड पर प्रशिक्षण लेते देखा तो उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वे उनके साथ शामिल हो सकते हैं। उस समय महाराणा क्लब गुवाहाटी सबसे बड़ा फुटबॉल क्लब था। इस क्लब ने कॉटन कालेज के स्ट्राइकर तालीमेरेन को एक रक्षात्मक मिडफील्डर के रूप में तराशा।

क्लब उन्हें अपनी विरोधी टीम के विरुद्ध खड़ा करके बहुत प्रसन्न था, जो गोल पर वापस अटैक करता था और तालीमेरेन शीघ्र ही ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने लगे जो हैदराबाद सिटी पुलिस के महान फुटबॉलर नूर मोहम्मद को रोकने का दुस्साहस करते थे। उन्होंने हरेक अच्छी बात को आत्मसात किया, अच्छे खिलाडियों के प्रशिक्षण के तरीकों को सीखा और हमेशा समाचारपत्रों के मुख्य समाचारों में उनका नाम रहा।

तालीमेरेन का गुवाहाटी से फुटबॉल की हृदय–स्थली कोलकाता आगमन तक हुआ, तब उन्हें कार्मिकल मेडिकल कालेज (आज का आरजी कर मेडिकल कालेज) में एक सीट मिली। महाराणा क्लब के उनके मित्र, शरत दास 1943 में तालीमेरेन को मोहन बागान ले आए और ज्वाइनिंग फीस अदा की। यह वह पल था, जब तालीमेरेन को प्लेइंग इलेवन में खेलने का अवसर मिला और यहां से तालीमेरेन का डॉक्टर और फुटबॉलर बनने का एक नया अध्याय शुरु हुआ। अगले एक वर्ष बीतते–बीतते तालीमेरेन ने अपनी खेल–शैली की बदौलत मोहन बागान टीम में साथ–साथ भारतीय फुटबॉल की कप्तानी भी हासिल की। उन्हें लंदन ओलम्पिक तथा हालैंड के संक्षिप्त दौरे पर भी भेजा गया।

ओलंपिक में तालीमेरेन की टीम ने फ्रांस को खूब छकाया, लेकिन दो पेनल्टी छूट जाने की वजह से 1–2 से हार झेलनी पड़ी। ओलंपिक के बाद, हालैंड दौरे पर इस टीम ने कई क्लब मैच खेले। उन्होंने एजाक्स एम्सटर्डम को 5–2 से पराजित किया, वहीं इंग्लैंड में पाँच मैचों में से तीन में जीत हासिल की, जबकि दो मैच ड्रा रहे।

ऐसा कहा जाता है कि तालीमेरेन को आर्सेनल के साथ एक वर्ष के अनुबंध की पेशकश की गई, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। वे भारत वापस आ गए तथा अपना अध्ययन जारी रखा और 1950 में एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की।

भारतीय कप्तान के रूप में, उन्हें स्वतः अग्रणी भूमिका मिली। टीम उनके आत्मविश्वास के पीछे एकजुट हो गई। परम्परागत नागा प्रथा के तहत, तालीमेरेन आओ का नाम सुबंगवती तालीमेरेन निंगडांगरी पढ़ा जा सकता था। उनके नाम में उनके पिता का नाम, इसके बाद उनका नाम और इसके बाद उनके वंश का नाम शामिल है।

डाक विभाग डॉ. तालीमेरेन आओ पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण /विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	:	6.0 लाख 6.0 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00